काव्य के कुछ प्रमुख तत्व

काव्य रूप :- यह शिल्प, संरचना, स्थापत्य, तकनीक आदि का पुराना नाम है। काव्य रूप दो प्रकार के होते हैं — प्रबंध काव्य रूप और मुक्तक काव्य रूप।

प्रबंध काव्य कथात्मक होता है, घटना दर घटनाओं की शृंखला में इसकी कथा बंधी होती है। प्रबंध काव्य में कवि सम्पूर्ण जीवन को अपना विषय बनाता है। यह कम से कम सात सर्गों में लिखा जाता है। जीवन में आये मोड़ों के आधार पर सर्गों का निर्धारण होता है। इसमें एक मुख्य कथा होती है और कई गौण कथायें। नायक - नायिका की कथा ही मुख्य कथा कहलाती है उसे ही आधिकारिक कथा कहते हैं। गौण कथायें मुख्य कथा के विकास में सहायक होती हैं, इन्हें प्रासंगिक कथायें भी कहते हैं। प्रबंध काव्य में एक मुख्य रस होता है और कई गौण रस। मुख्य रस को ही अंगी रस कहते हैं। इसका प्रत्येक सर्ग एक ही छंद में लिखा जाता है और सर्ग के अंत में छंद परिवर्तन होता है। प्रबंध काव्य में सज्जन प्रशंसा और दुर्जन निंदा होती है।

महाकाव्य :- कोई न कोई प्रबंध काव्य ही महाकाव्य होता है लेकिन सभी प्रबंध काव्य महाकाव्य नहीं होते। महाकाव्य की शर्तें हैं - विराट कथा फलक, उदात्त नायक, चिरंतन मूल्यों की प्रतिष्ठा, लोकमंगल की सिद्धि तथा विभिन्न वर्गीय चरित्रों का नियोजन।

खण्डकाव्य :- इसमें जीवन के एक अंश या खंड का चित्रण होता है, इसमें सात से कम सर्ग होते हैं।

मुक्तक काव्य :- मुक्तक काव्य में कोई कथा नहीं होती इसलिए वह आगे - पीछे से बिल्कुल मुक्त होता है। कबीर रहीम आदि के दोहे मुक्तक हैं।

छंद :- छंद शब्द 'छद' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आह्लादित करना'। "निश्चित वर्णों या मात्राओं द्वारा नियमित निर्धारित रचना छंद है।" गद्य छंदमुक्त होता है और पद्य छंदयुक्त। मतलब यह कि छंदोबद्ध रचना को ही पद्य कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं:- वर्णिक और मात्रिक। वर्णिक छंद में वर्णों की निश्चित संख्या होती है और मात्रिक छंद में मात्रायें निश्चित होती हैं। प्रत्येक छंद चाहे वह वर्णिक हो या मात्रिक चार चरणों का होता है। मतलब यह कि छंद का चौथा भाग चरण कहलाता है। दो चरणों के बीच में यति (विराम) होती है। वर्णिक में वर्णों की गिनती होती है और मात्रिक में मात्राओं की। किसी भी वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं। जिसके उच्चारण में कम समय लगता है उसे ह्रस्व और जिसमें अधिक उसे दीर्घ। दीर्घ ह्रस्व का दुगुना है। ह्रस्व को लघु कहते हैं और दीर्घ को गुरु। लघु में एक मात्रा होती है और दीर्घ में दो। अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व हैं। यदि किसी शब्द में ये स्वतंत्र रूप से हैं या व्यंजन के साथ आये हुए हैं तो हर ह्रस्व के साथ एक मात्रा गिनी जाएगी।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ ये जब स्वयं ~~आयेंगे~~ आयेंगे या किसी व्यंजन के साथ आयेंगे तो दो मात्रा गिनी जायगी। (S)

लघु स्वर के अनंतर यदि अनुस्वार, विसर्ग अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो तो वह लघु स्वर गुरु माना जाता है।

दोहा, चौपाई मात्रिक छंद हैं। द्रुत बिलम्बित, तोटक, मालिनी आदि वर्णिक छंद हैं। दोहा में 13,11 ~~एवं~~ 13,11 का क्रम होता है।

रहिमन निजमन की बिथा, मन ही राखो गोय।
I I II I I I I S I S   I I S S S S I
सुनि अठि लैहैं लोग सब, बांटि न लैहैं कोय।
I I I I S S S I I I S I I S S S I

13 | 11

चौपाई के चारों चरणों में सोलह-सोलह मात्रायें होती हैं। प्रत्येक अर्द्धाली (दो पंक्तियां) तुकान्त होती हैं।

बहुरि बदन विधु आंचल ढांकी,
पिउतन चितै भौंह करि बांकी। ⟹ 16 मात्रायें।
खंजन मनु तिरीछे नैननि,
निज पति कहेउ तिनहि सिय सैननि।

वर्णिक छंद में बारह (12) मात्रायें होती हैं।

दिवस (3) का (1) अवसान (4) समीप (3) था (1)
गगन था कुछ लोहित हो चला ⟹ 12 मात्रायें।
तरु शिखा पर थी अपराजती
कमलिनी कुल वल्लभी की प्रभा।